Course code	Jain Agama Sahirya aur Darshan, Paper –I , (DSE/GE 9A)	L	T	P	C
BJAPR20Y301	**जैन आगम साहित्य और दर्शन, प्रश्न पत्र –1**	3	2	0	5

Pre-requisite	Nil	Syllabus version
		50 Marks

Course Objectives:

- प्राकृत आगमों के इतिहास की व्यापक जानकारी प्रदान करना।
- छात्रों में आगम साहित्य के अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- आगमों से प्राप्त ज्ञान के उपयोग की प्रवृत्ति विकसित करना।
- प्राचीन भाषा में कुशलता एवं दक्षता विकसित करना।

Course Outcome:

- प्राकृत भाषा आगमों की पारम्परिक विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत की महत्ता का पता चलना।
- जैनागमों के इनिहास और परम्परा का ज्ञान होना।
- प्राकृत आगमों की विभिन्न विधाओं की समझ विकसित होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में भाषा कौशल का विकास होना।
- आगमों निहित ज्ञान के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- आगमों की भाषा के अभ्यास के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियाँ एवं प्रयोगों का विकास होना।
- भाषा एवं विषयगत समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-I	**15**

जैन आगम –

- जैन आगम की परम्परा
- जैन आगम का विकासक्रम।
- जैन आगम का महत्त्व।
- जैन आगमों की विशेषताएँ।

Unit -2	**15**

अर्धमागधी आगम –

- आचारांग सूत्र (आयारंग)
- सूत्रकृतांग सूत्र (सूयगडंग)
- भगवती सूत्र (वियाहयण्णत्ति)
- ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र (नायाधम्मकहाओ)
- उपासकदशा सूत्र (उवासगदसाओ)
- कल्पसूत्र (कप्पसुत्तं)

• उत्तराध्ययनसूत्र (उत्तरज्झयणसुत्तं) • दशवैकालिकसूत्र (दसवेयालियसुत्तं)	
Unit-3	**15**
शौरसेनी आगम – • छक्खंडागम (षट्खंडागम) • कसायपाहुड (कषायप्राभृत) • मूलाचार (मूलायार) • भगवती आराधना (भगवदी आराहणा) • कार्तिकेयानुप्रेक्षा (कत्तिगेयाणुवेक्खा) • पंचास्तिकाय (पंचात्थिकायो) • गोम्मटसार (गोम्मटसारो) • द्रव्यसंग्रह (दव्वसंगहो) • तत्त्वसार (तच्चसारो)	
Unit-4	**15**
• तत्त्वार्थसूत्र (प्रथम अध्याय) प्राकृत रूपान्तरण	
Unit-5	**15**
जैन दार्शनिक तत्त्व – • पांच अस्तिकाय • छह द्रव्य • सात तत्त्व • नौ पदार्थ	

आशीषपंत

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures			

Text/Reference Books

1. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी।
2. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी।
3. शौरसेनी प्राकृतभाषा और उसके साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – डॉ. राजाराम जैन, कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली।
4. भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल।
5. जैन साहित्य का इतिहास – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
6. तत्त्वार्थसूत्र (प्राकृत रूपान्तरण) आचार्य सुनीलसागर जी महाराज, सम्पादक : डॉ. महेन्द्र मनुज, जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर।
7. जैन धर्म – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री, प्राच्य श्रमण भारती, मुजफ्फरनगर।
8. जैन दर्शन – पं. महेन्द्र कुमार जैन न्यायाचार्य, गणेश वर्णी दिगम्बर जैन शोध संस्थान, वाराणसी।

Course code	Bharatiya Natya Parampara aur Sahitya, Paper –II, (DSE/GE 9B)	L	T	P	C
BJAPR20Y302	भारतीय नाट्य परम्परा और साहित्य – प्रश्न पत्र –2	3	2	0	5
Pre-requisite	**Nil**	**Syllabus version**			
		50 Marks			

Course Objectives:

- जनरंजन के इतिहास की व्यापक जानकारी देना।
- छात्रों में प्राकृत नाट्य साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत करना।
- नाटकों के अभ्यास की प्रवृत्ति विकसित करना।
- संवाद कथन में कुशलता एवं दक्षता विकसित करना।

Course Outcome:

- मनोरंजन की क्षमताओं एवं विशेषताओं का ज्ञान होना।
- प्राकृत में संवाद दक्षता और उसकी रोचकता का पता चलना।
- नाटकों की प्राकृत के इतिहास और परम्परा का ज्ञान होना।
- प्राकृत भाषा की विभिन्न विधाओं की समझ विकसित होना।

Student Learning Outcomes (SLO):

- छात्रों में संवाद कौशल का विकास होना।
- छात्रों में संवाद के अनुकूलन की सोच विकसित होना।
- जनरंजन के लिए नूतन तकनीक, कौशल विधियाँ एवं प्रयोगों का विकास होना।
- व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं का निदान करने की क्षमता का विकास होना।

Unit-I	15

भारतीय नाट्य परम्परा –

- नाटक का उद्भव।
- नाटक का विकास।
- नाटक का महत्त्व।
- भारत में नाटक के मंचन का इतिहास।

Unit -2	15

सट्टक परम्परा –

- सट्टक का उद्भव।
- सट्टक का विकास।
- सट्टक का महत्त्व।
- प्राकृत के प्रमुख सट्टक ।

Unit-3	15

मृच्छकटिकम् में प्रयुक्त प्राकृतों का परिचय– • मागधी • शौरसेनी • अर्धमागधी • अवन्तिजा • प्राच्या।
Unit-4 **15**
• नाट्यशास्त्र (भरतमुनि) अध्याय 17।
Unit-5 **15**
• सुभद्रा नाटिका – महाकवि हस्तिमल्ल।

# Mode: Flipped Class Room, Case Discussion, Lectures		
Text/Reference Books		

1. मृच्छकटिकम् – रमाशंकर त्रिपाठी (हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या सहित), मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1969।
2. कर्पूरमंजरी – श्री रामकुमार आचार्य, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी, 2012
3. इन्ट्रोडक्सन टू कर्पूरमंजरी : डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार)
4. प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमलचन्द्र जैन, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
7. रंभामंजरी –डॉ. आर. पी. पोद्दार, प्राकृत जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, (बिहार)
8. प्राकृत प्रवेशिका : लेखक श्री आल्फ्रेड सी. वूल्लर, अनुवाद – बनारसीदास जैन, प्रकाशन : पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर।
9. प्राकृत विमर्श – सरयू प्रसाद अग्रवाल, प्रकाशन : लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।